उसने हमें भविष्यवक्ता दिए

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय छः

भविष्यवाणी का साहित्यिक विश्लेषण

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:26) 4

II. ऐतिहासिक वर्णन (1:41) 4

A. वर्णनों के प्रकार (3:10) 4
1. जीवनकथा (3:23) 4
2. आत्मकथा (4:29) 4

B. ऐतिहासिक वर्णनों की विषय-वस्तु (5:27) 5
1. भविष्यवाणिय बुलाहट (5:50) 5
2. प्रतीकात्मक कार्य (6:59) 5
3. दर्शन के वर्णन (8:09) 5
4. ऐतिहासिक पृष्ठभूमियां (10:23) 6

III. परमेश्वर के साथ वार्तालाप (12:52) 6

A. विलाप की प्रार्थनाएं (13:45) 6
1. लोगों के पाप (15:11) 7
2. दण्ड (16:55) 7

B. स्तुति की प्रार्थनाएं (19:16) 7
1. दण्ड (20:37) 8
2. आशीषें (21:58) 8

IV. लोगों के साथ वार्तालाप 9

A. दण्ड के कथन (24:43) 9
1. दण्ड के वचन (25:17) 9
2. हाय के वचन (27:22) 10
3. मुकद्दमें (29:14) 10

B. आशीष के कथन (32:04) 11
1. शत्रुओं पर दण्ड (32:25) 11
2. आशीष के वचन (33:22) 11

C. मिश्रित कथन (35:22) 11
1. दण्ड-उद्धार के वचन (35:40) 12
2. पश्चाताप की बुलाहट (35:58) 12
3. युद्ध की बुलाहट (36:18) 12
4. भविष्यवाणिय विवाद (36:31) 12
5. दृष्टांत (36:59) 13

V. निष्कर्ष (37:45) 13

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 14

उपयोग के प्रश्न 19

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:26)

II. ऐतिहासिक वर्णन (1:41)

पुराने नियम की भविष्यवाणीय पुस्तकों में भी बहुत से ऐतिहासिक वर्णन हैं।

A. वर्णनों के प्रकार (3:10)

1. जीवनकथा (3:23)

दानिय्येल की पुस्तक के पहले छः अध्याय दानिय्येल के जीवन की कई घटनाओं को तीसरे व्यक्ति के जीवनकथात्मक दृष्टिकोण से दर्शाते हैं।

2. आत्मकथा (4:29)

दानिय्येल 7-12 आत्मकथा की ओर मुड़ जाते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुराने नियम के लेखकों ने ऐतिहासिक वर्णन के रूप में लिखा ताकि वे अपने अध्यायों को अप्रत्यक्ष रूप से हमें सीखा सकें।

B. ऐतिहासिक वर्णनों की विषय-वस्तु (5:27)

1. भविष्यवाणिय बुलाहट (5:50)

भविष्यवाणिय बुलाहट उन समयों का वर्णन है जब परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को उसके बारे में बात करने की आज्ञा दी थी।

2. प्रतीकात्मक कार्य (6:59)

बहुत बार परमेश्वर ने अपने वक्ताओं को कुछ खास कार्य करने के लिए बुलाया जिन्होंने प्रतीकात्मक कार्य किया।

3. दर्शन के वर्णन (8:09)

दर्शन के वर्णन वे जहां भविष्यवक्ता परमेश्वर के साथ दर्शनरूपी भेंट का वर्णन करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. ऐतिहासिक पृष्ठभूमियां (10:23)

भविष्यवाणिय संदेशों और कार्यों के संदर्भ को प्रदान करने के लिए बनाई गईं ताकि हम उन्हें उचित रूप में समझ सकें।

III. परमेश्वर के साथ वार्तालाप (12:52)

पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने उन रूपों में परमेश्वर से प्रार्थना की जैसे भजनकारों ने की थीं। हर प्रकार की प्रार्थना भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों में पाई जा सकती है।

A. विलाप की प्रार्थनाएं (13:45)

ये वे प्रार्थनाएं हैं जो प्रभु के समक्ष निराशा, उदासी और असमंजस को रखती हैं।

भविष्यवाणी की पुस्तकों में विलाप की प्रार्थनाओं की अधिकता दर्शाती है कि यह भविष्यवाणीय सेवकाई का बहुत ही महत्वपूर्ण भाग थी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. लोगों के पाप (15:11)

हबक्कूक ने दो बड़ी समस्याओं के विषय में परमेश्वर से बात की :

- परमेश्वर के विरूद्ध इस्राएल के विद्रोह
- बेबीलोनियों के आक्रमण में परमेश्वर के दण्ड की भयानक परिस्थिति

जब भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर के लोगों के दर्द और कष्ट को देखा तो वे परमेश्वर के समक्ष रोए और दूसरों को भी विलाप करते हुए रोने के लिए बुलाया।

2. दण्ड (16:55)

सामान्यतः भविष्यवक्ताओं ने इसलिए विलाप किया कि लोग यह जान लें कि उनके पाप कितने भयंकर थे, और वह उन्हें पश्चाताप करने के लिए बुलाए।

B. स्तुति की प्रार्थनाएं (19:16)

जब भविष्यवक्ताओं ने देखा कि परमेश्वर क्या करने जा रहा था तो स्तुति करते हुए उसके पास आए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब भविष्यवक्ता स्तुति के साथ प्रभु का सम्मान करते हैं, तो उसके दण्ड और आशीषों के लिए उसकी स्तुति करते हैं।

1. दण्ड (20:37)

भविष्यवक्ताओं ने अन्यजाति के राष्ट्रों पर प्रहार करने और उन्हें दण्ड स्वरूप नाश करने की उसकी योग्यता के लिए परमेश्वर को सम्मान दिया।

जब परमेश्वर उन्हें दण्डित करता है जो उसके लोगों को सताते हैं, तो परमेश्वर के लोगों को उसकी स्तुति करनी चाहिए।

2. आशीषें (21:58)

भविष्यवक्ताओं ने प्रायः न केवल उसके दण्ड के लिए प्रभु की स्तुति की बल्कि उन अनेक आशीषों के लिए भी जो वह अपने लोगों को देता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. लोगों के साथ वार्तालाप

परमेश्वर ने भविष्यवक्ताओं को उसके राजदूत होने के लिए बुलाया गया था। उनके वचनों के अधिकांश भाग लोगों के लिए परमेश्वर के संदेश थे।

A. दण्ड के कथन (24:43)

के भविष्यवक्ताओं ने सामान्यतः लोगों को अपनी बातें विशिष्ट प्रारूपों या तरीकों में कही।

1. दण्ड के वचन (25:17)

दण्ड के एक विशिष्ट वचन में दो मुख्य घटक पाए जाते हैं :

- दोषारोपण — भविष्यवक्ता परमेश्वर के लोगों के पापों की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

- दण्डादेश — भविष्यवक्ता घोषणा करता है कि अपने पापों के कारण लोग किस प्रकार के वाचायी श्राप का अनुभव करेंगे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. हाय के वचन (27:22)

हाय के वचन दण्ड के वचनों के बहुत ही समान है, बस इनकी शुरूआत हाय के साथ होती है।

3. मुकद्दमें (29:14)

"*रिब*" — कानूनी प्रक्रिया या मुकद्दमा जो महान् राजा यहोवा के स्वर्गीय न्यायालय में होता है।

भविष्यवक्ता प्रायः स्वर्गीय दर्शन देखते थे, और अनेक बार परमेश्वर के सिंहासन कक्ष को न्यायालय के रूप में देखा जाता था।

मुकद्दमें परमेश्वर द्वारा लोगों को दोषी ठहराने और उन्हें दण्ड की चेतावनी देने के तरीके के रूप में प्रकट होते हैं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. आशीष के कथन (32:04)

1. शत्रुओं पर दण्ड (32:25)

अन्यजाति के शत्रुओं के विरूद्ध दण्ड और हाय के वचनों एवं मुकद्दमों ने :

- घोषणा की थी कि परमेश्वर इस्राएल के शत्रुओं को नाश कर देगा
- इस्राएल को आश्वस्त किया परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाएगा

2. आशीष के वचन (33:22)

आशीषों की घोषणाएं अपनी रचना में बहुत ही लचीली थीं। एक मूलभूत प्रारूप सदैव प्रकट होता है :

- परिचयात्मक संबोधन
- आशीष का कोई कारण
- स्पष्टीकरण कि वह आशीष क्या होगी

C. मिश्रित कथन (35:22)

मिश्रित कथन कई विभिन्न रूपों में आते हैं। इनमें परमेश्वर की आशीषों और परमेश्वर के श्रापों दोनों का उल्लेख करने की क्षमता होती है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. **दण्ड-उद्धार के वचन (35:40)**

   जहां एक ही कथन में कुछ को दण्ड की चेतावनी दी जाती है और कुछ को आशीषें प्रदान की जाती हैं।

2. **पश्चाताप की बुलाहट (35:58)**

   भविष्यवक्ता दण्ड की चेतावनी देते हुए और पश्चाताप करने वालों को आशीष की प्रतिज्ञा देते हैं।

3. **युद्ध की बुलाहट (36:18)**

   भविष्यवक्ताओं ने अपने श्रोताओं को युद्ध में विजय या पराजय का संदेश दिया।

4. **भविष्यवाणिय विवाद (36:31)**

   भविष्यवक्ता दूसरे भविष्यवक्ताओं के साथ विवाद में पड़ जाते थे।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. दृष्टांत (36:59)

दृष्टांत परमेश्वर के अनुग्रह की सकारात्मक घोषणा या उसके दण्ड की नकारात्मक घोषणा हो सकते हैं।

V. निष्कर्ष (37:45)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. पुराने नियम की भविष्यवाणियों में पाए जाने वाले दो प्रकार के ऐतिहासिक लेखनों का वर्णन कीजिए।

2. पुराने नियम के भविष्यवाणिय लेखनों में विवध प्रकार के विषयों का वर्णन कीजिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. पुराने नियम के भविष्यवाणिय लेखनों में ऐतिहासिक वर्णनों का इस्तेमाल किस प्रकार किया गया है?

4. विलाप की प्रार्थनाएँ कैसी होती हैं, और भविष्यवक्ताओं ने उनका इस्तेमाल कैसे किया?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. स्तुति की प्रार्थनाएँ कैसी होती हैं, और भविष्यवक्ताओं ने उन्हें कैसे इस्तेमाल किया?

6. दण्ड के कथन कैसे होते हैं, और भविष्यवक्ताओं ने उन्हें कैसे इस्तेमाल किया?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. आशीष के कथन कैसे होते हैं, और भविष्यवक्ताओं ने उन्हें कैसे इस्तेमाल किया?

8. मिश्रित कथन क्या हैं, और भविष्यवक्ताओं ने उन्हें कैसे इस्तेमाल किया?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. सामान्यतः भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी क्यों की?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. भविष्यवाणिय पुस्तकों में ऐतिहासिक वर्णनों पर ध्यान देना क्यों महत्वपूर्ण है? जब हम भविष्यवाणिय लेखनों को पढ़ते हैं तो ऐतिहासिक वर्णनों में लिखी बातों के बारे में हमारी समझ और हमारे द्वारा पढ़े जाने वाली अन्य बातों में कैसा संबंध होना चाहिए?

2. हमें किस प्रकार भविष्यवाणी को पढ़ना चाहिए, इसके बारे में प्रमाणिक भविष्यवाणिय प्रारूप क्या दर्शाते हैं?

3. पिछली बार कब आपने परमेश्वर के समक्ष विलाप करते हुए समय बिताया था? किस प्रकार का विलाप आपने किया? कितनी बार आप कष्टों को अपने जीवन में दैवीय दण्ड के परिणाम के रूप में समझते हैं? क्या कोई और कारण भी हैं जिनमें मसीही कष्टों को सहते हैं? भविष्यवक्ताओं द्वारा किए गए विलाप के उन रूपों से हम क्या सीख सकते हैं जो शायद परमेश्वर को सकारात्मक रूप से प्रत्युत्तर देने में प्रेरित करें?

4. दण्ड के लिए स्तुति भविष्यवाणिय लेखनों में बहुत स्थानों में पाई जाती है। क्या मसीहियों के लिए दण्ड के लिए परमेश्वर की स्तुति करना उचित है? क्यों या क्यों नहीं?

5. भविष्यवक्ताओं ने परमेश्वर की आशीषों और श्रापों के बारे में बार-बार क्यों बोला? क्या आज की कलीसिया को ऐसा ही करना चाहिए? क्यों या क्यों नहीं?

6. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org